भोटी भाषा का महत्व
एवं
भोटी भाषा को संविधान के आठवें परिच्छेद में सम्मिलित करने के सन्दर्भ में

HIMALAYAN BUDDHIST CULTURAL ASSOCIATION

MEMORANDUM

IMPORTANCE OF BHOTI LANGUAGE
&
RECOGNITION OF BHOTI LANGUAGE IN THE EIGHT SCHEDULE IN CONTEXT TO RECOGNISE

INDEX / विषय सूची

1. निवेदन

2. Appeal

3. भोटी भाषा एवं उसका महत्त्व

4. भोटी भाषा को संविधान के आठवें परिच्छेद में सम्मिलित करने के सन्दर्भ में

5. Importance of Bhoti Language

6. Recognition of Bhoti Language in the Eight Schedule in context to recognise

7. Founder of Bhoti Language
Acharya Thonmi Sambhota

8. Importance of Bhoti Langauge (In Bhoti)

Published by :
Himalayan Buddhist Cultural Association,
Ladakh Buddhist Vihar, Bela Road, Delhi-54
Ph,: 3965323

निवेदन

सामान्यतः भाषा समाज में विद्यमान सम्बन्धों को व्यक्त करने, ज्ञान एवं चिन्तन को प्रकाश में लाने का एक उत्कृष्ट माध्यम है, जिसके आधार पर युगों से चली आ रही विभिन्न संस्कृतियों एवं जातीय संस्कारों का जन्म होता है । विभिन्न सांस्कृति एवं संस्कारों के आधार पर ही विभिन्न भाषाऐं पनपती हैं ।

ऐसी विश्व के प्राचीनतम सांस्कृतिक भाषाओं में से भोटी भाषा मध्य एशियाई भाषा परिवार की एक उत्कृष्ट सांस्कृतिक भाषा है । भोटी भाषा भारत के सम्पूर्ण हिमालय वासियों की मातृभाषा एवं भारतीय संस्कृति का श्रोत है । इस भाषा का इतिहास 1300 साल पुराना एवं समृद्ध है। यह पूरे हिमालय क्षेत्र के लोगों का जीवन पद्धति भी है। यह अनेक शोध कार्य के द्वारा सिद्ध हो चुका है । लदाख से अरूणाचल तक के हिमालय वासियों की शिक्षा विकास, सांस्कृतिक संरक्षण एवं करूणा मैत्री के सम्वर्धन के लिए भारत सरकार से मान्यता प्राप्त करने हेतु आपके सहयोग एवं सुझाव की आवश्यकता है।

कृप्या आप इस सम्मेलन में पधार कर हिमालय वासियों को देश की मुख्य धारा में जोड़ने के लिए सहयोग करे।

लामा छोस्फेल् जोतपा
अध्यक्ष
हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा
फोन : 3965323

APPEAL

Language is the medium of introduction in society to exchange and express the thinking and thoughts of the people. In accordance to that several cultures, races and traditions was born. Several language was survive according to different traditions.

In this world "BHOTI" language is one of the rich cultural language of the middle asia. The history of this language is 1300 years old and enriched. Many studies/researchers prove that the primary form of this language was dialectics of people of entire himalayan region of India, therefore, "BHOTI" is the mother tongue of himalayan people as well as source of indian culture.

To developed the education and preservation of culture of entire Himalayan people of Ladakh to Arunachal Pradesh, and for compassion, friendship for this to get the recognation from Govt. of India, so it is very important to suggest and help, ***so you are requested to participate in this conference. It will also help to bring himalayan people into national mainstream of the country.***

Lama Chosphel Zotpa
President
Himalayan Buddhist Cultural Association
Ph.: 3965323

भोटी भाषा एवं उसका महत्त्व

सामान्यतः भाषा समाज में विद्यमान सम्बन्धों को व्यक्त करने, ज्ञान एवं चिन्तन को प्रकाश में लाने का एक उत्कृष्ट माध्यम है, जिसके आधार पर युगों से चली आ रही विभिन्न संस्कृतियों एवं जातीय संस्कारों का जन्म होता है । विभिन्न संस्कारों के आधार पर ही विभिन्न भाषाऐं पनपती हैं । ऐसी विश्व के प्राचीनतम सांस्कृतिक भाषाओं में से भोटी भाषा मध्य एशियाई भाषा परिवार की एक उत्कृष्ट सांस्कृतिक भाषा है । इस भाषा का जन्म कब और कैसे हुआ ? इसका विवरण प्रस्तुत करना यहाँ सम्भव नहीं है। **भोटी भाषा भारत के सम्पूर्ण हिमालय वासियों की मातृभाषा एवं भारतीय संस्कृति का श्रोत है । इस भाषा का इतिहास 1300 साल पुराना एवं समृद्ध है । यह पूरे हिमालय क्षेत्र के लोगों का जीवन पद्धति भी है। यह अनेक शोध कार्य के द्वारा सिद्ध हो चुका है ।**

यह भाषा प्राचीन काल में मध्य एशियाई विभिन्न लिपिओं में लिखी जाती थी, इसका कुछ प्रमाण अवश्य मिलते हैं । पर ऐसी लिपि में आबद्ध कोई साहित्य आज उपलब्ध नहीं है । कालान्तर में इस भाषा की प्रकृति के अनुरूप एक स्वतन्त्र लिपि की रचना हुई है । इसकी रचना सातवीं सदी के पूर्वार्ध में भारतीय प्राचीन लिपि, जिसे ब्राह्मी लिपि कहा जाता है, की संरचना के आधार पर हुई है । कुछ इतिहासकार इसे गुप्त कालीन परिष्कृत लिपियों के आधार पर बनी लिपि मानते हैं । यद्यपि प्राचीन भोटी भाषा अन्य प्राचीन भाषाओं की तरह सामान्य बोल-चाल की भाषा एवं साहित्य, शास्त्र आदि से सम्बधित भाषा के दो रूपों में थी। इस भाषा में उपनिषद् एवं अन्य प्राचीन साहित्य प्रायः मौखिक ही हुआ करता था । सातवीं सदी के पूर्वार्ध जब से इस भाषा की प्रकृति के अनुरूप एक स्वतंत्र लिपि की रचना हुई थी, तब से इस भाषा से सम्बद्ध समस्त शास्त्र उसी लिपि में लिखना आरम्भ हुआ तत्पश्चात् इस भाषा के माध्यम से रचे गये साहित्य, शास्त्रों का विस्तार बहुत बड़े क्षेत्र में होने लगा है । समय के साथ साथ पाणिनीय व्याकरण के आधार पर इसका श्रेष्ठ व्याकरण की रचना हुई ।

भोटी भाषा - यह तो सर्वमान्य सिद्धान्त है कि हर परिष्कृत भाषा का पूर्वरूप बोलचाल की बोली के रूप में विकसित होता है । बोलियों का जन्म विशेष भौगोलिक सीमा के अंदर रहने वाली प्रजातियों के मौखिक व्यवहार एवं संस्कारों से होता है । तदनुसार भोटी भाषा का पूर्वरूप भी पुरातन मध्य ऐशिया के विस्तृत भू-भाग में रहने वाली प्रजातियों की बोली थी । इन प्रजातियों का ऐतिहासिक विवरण यहाँ अपेक्षित नहीं है । परन्तु उर्पयुक्त भाषाई संस्कारों से सम्बद्ध प्रजातियों के सांस्कृतिक विस्तार चीन क प्राचीन प्रजातीयों की भौगोलिक सीमा से लेकर **भारत की सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्र में देखा जाता है । इन क्षेत्रों की विभिन्न बोलियों के परिष्कृत रूप ही भोटी भाषा है ।**

नामकरण - भोट भाषा या भोटी भाषा से तात्पर्य भोट देश के लोगों की बोली जाने वाली भाषा है । यानि उन प्रजातियों की भाषा होने के कारण इसे "भोटी" कहा जाता है । भोट देशीय प्रजातियों के सम्बन्ध में बहुत से जन श्रुतियां प्रचलित हैं । एक प्रसिद्ध जनश्रुती के अनुसार यह बहुत प्रचलित मान्यता है कि भोट देश की प्रजातियों का सम्बन्ध पूर्वोत्तर द्वापर युग के राजपूतों के वंश से थे । महाभारत के युद्ध में कौरवों के हार के पश्चात् रूपवति आदि राजा और बहुत से राजपूत सेना अपने देश छोड़कर सपरिवार हिमालय में बस गये । इन्हीं लोगों से भोट देशीय विभिन्न प्रजातियों का विस्तार हुआ है । इस तरह का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है । इसी मान्यता के आधार पर बहुत से लोग भोट भाषा को आर्य भाषा के परिवार की भाषा मानते हैं ।

दूसरी प्रचलित मान्यता यह भी है कि पाण्डवों के वनवास के समय कुछ समय के लिये वे लोग व्यास नदी के स्रोत स्थान "**रोथड्.ला**" के तटवर्ती "मनु-आलय", जिसका अपभ्रंश रूप आज "मनाली" कहा जाता है, में बसे थे । उस दौरान वहाँ के स्थानीय राजकुमारी "हिडिम्बा" भीमसेन के सम्पर्क में आ गई । हिडिम्बा ने भीमसेन के दो पुत्रों को जन्म दिया । उनमें से बड़े लड़के का नाम था "कुल्लु" और कनिष्ठ लड़के का नाम था "भोट"। भीम ने हिडिम्बा के भाई राक्षस को लड़ाई में मारकर अपने बड़े लड़के "कुल्लु" को वहाँ का राजा बना दिया । तब से उस के राज्य का नाम "कुल्लु" पड़ा । कनिष्ठ

पुत्र भोट को "रोथड्." दर्रा के पार देव लोक भेज दिया और उसने देवलोक जाकर अपने राज्य की स्थापना की ।

भोट राजा के राज्य का ही नाम बाद में भोट देश हो गया । भोट के राजवंशों के विस्तार के रूप में भोट देशीय प्रजातियों का विस्तार हुआ है । इन्हीं लोगों की भाषा को भोटी भाषा कहा जाता है । इन जन श्रुतियों में सत्यांश कितना है, कहना कठिन है, पर इस समय **समस्त हिमालयी क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा को भोटी कहा जाता है** । इसे मध्य तिब्बत में भी बोली जाने वाली विकसित भाषाओं का प्राचीनतम रूप माना जाता है ।

भोट के क्षेत्र - भोटी कही जाने वाली भाषा जन भाषा के रूप में समस्त हिमालयी क्षेत्र में बोली जाती है । यह **भारत की सीमा रेखा के अन्दर आने वाली हिमालय क्षेत्रों में सम्पर्क के रूप में बोली जाती है** । उन्नीसवीं सदी के बाद आस्ट्रेलिया, यूरोप, एशिया, जापान, अमेरिका सहित अन्य देशों के विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थाओं में भोटी भाषा का प्रयोग होता है तथा अधिकांश क्षेत्रों में बोली जाती है । साथ ही भूटान, नेपाल, मंगोलिया, तिब्बत आदि मध्य ऐशिया के बहुत बड़े क्षेत्र में इसे शास्त्रीय भाषा के रूप में लिखा और बोला जाता है । एवं उससे सम्बद्ध शास्त्रीय विषयों के अध्ययन अध्यापन और शोद्ध कार्य व्यापक स्तर पर होने लगा है । भोटी मध्य ऐशिया की प्रमुख भाषा होने के साथ यह भारत के **हिमालयी प्रदेश, कारगिल, जांसकर, लद्दाख लाहौल, स्पीति, किन्नौर, कुमाउ, उतरकाशी, सिक्किम, कालिम्पोंग, दार्जिलिंग, अरूणाचल, आदि प्रायः पूरे हिमालयी क्षेत्र की सम्पर्क भाषा** होने के साथ यह उनकी सांस्कृतिक भाषा भी है । इन क्षेत्रों में लोगों के जन्म से लेकर मरण तक के संस्कार इन्हीं भाषा में होते हैं । दूसरा यह इन क्षेत्रों की धार्मिक भाषा भी है । इनके समस्त धार्मिक एवं कर्मकाण्ड ग्रंथ इसी भाषा में होते हैं ।

भोटी साहित्य - किसी भाषा की उत्कृष्टता और मूल्य उसमें उपलब्ध साहित्य शास्त्र से आंका जाता है । विश्व की उत्कृष्ट प्राचीन भाषाओं में भोटी किसी से कम नहीं है । इसमें लिखी गई शास्त्रीय ग्रंथों का भण्डार न केवल

भोट देश में विद्यमान है, अपितु पूर्व में लीचि से लेकर अमेरिका तक पूरे विश्व मैं फैला हुआ है । केवल संस्कृत से भोटी में अनुदित ग्रंथों की संख्या ही दस हजार से अधिक है । इसके अतिरिक्त भोट देशीय विद्वानों के स्वतंत्र रूप से लिखे गये ग्रंथों की संख्या तो अनगिनत है । पन्छेन छोग्याल - नामग्यल (पण्डित दिग्विजय) नामक एक ही व्यक्ति की लिखी गई ग्रन्थों का संग्रह ही एक सौ पोथी (वॉलूम) से अधिक है ।

विषय की दृष्टि से काव्य, नाटक, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, आयुर्वेद या चिकित्सा विज्ञान, तर्कशास्त्र प्रमाण-शास्त्र, दर्शनशास्त्र, अभिधर्म-शास्त्र, परमिताशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र, कलाशास्त्र एवं तन्त्रशास्त्र आदि विविध विषयों का विपुल शास्त्र इस भाषा में उपलब्ध है ।

भगवान बुद्ध के उपदेशों का संकलन ग्रंथ के रूप में उपलब्ध जिनको त्रिपिटक के नाम से जाना जाता है, एक सौ आठ वॉलूम में मौजूद है । यह कि विश्व के अन्य त्रिपिटक संग्रहों में सबसे बड़ा संग्रह है । विशेष रूप से इस संग्रह में केवल बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट तन्त्र सम्बन्धी ग्रंथों का ही संग्रह चालीस वॉलूम में है । उपर्युक्त प्राय सभी ग्रंथ, जो संस्कृत के साथ - साथ प्रमुख भारतीय भाषाओं में लिखे गये ग्रन्थ हैं, भोटी भाषा में अनुवादित ग्रंथ हैं ।

उक्त सभी ग्रंथ इस समय अपने मूल भाषा में उपलब्ध नहीं हैं । दूसरे शब्दों में यों भी कहा जा सकता है कि सातवीं सदी से लेकर अठाहरवीं सदी तक जितनी आध्यात्मिक एवं शास्त्रीय ग्रन्थों की रचना इस भाषा में हुई है, सम्भवतः उतनी रचना किसी अन्य भाषा में नहीं हुई हैं । यह दूसरी बात है कि पन्द्रहवीं सदी के बाद आधुनिक साहित्यों की विपुल रचना हुई है ।

भोटी भाषा के महत्त्व - सामान्यत विश्व की अध्ययन परम्परा में भाषा अत्यधिक महत्त्व रखता है । भाषा के अभाव में कोई अध्ययन अध्यापन सुचारू रूप से आगे नहीं बढ़ सकता । इसी सन्दर्भ में भोटी भाषा लगभग पिछले चौदह पन्द्रह सौ वर्षों से उच्चतम अध्ययन अध्यापन का माध्यम बना हुआ

है । भारतीय मैदानी इलाकों में संस्कृत भाषा को जो महत्त्व प्राप्त है, वही महत्त्व मध्य ऐशियाई क्षेत्रों एवं हिमालयी क्षेत्रों में भोटी भाषा को प्राप्त है । इन क्षेत्रों में विभिन्न मंत्रों एवं सुत्र का शिलालेख इस भाषा में प्राप्त होते हैं, उतना सम्भवतः विश्व के किसी भी भाषा में प्राप्त नहीं हैं ।

भारतीय आध्यात्मिक विषयों को अभिव्यक्त करने के लिये संस्कृत भाषा में जो विशिष्ट क्षमता दृष्टिगत होती है, वही क्षमता भोटी में भी विद्यमान है। यही कारण है कि आज विश्व के विकसित एवं विकासशील क्षेत्रों के अधिकांश उच्च शिक्षा संस्थानों में इस भाषा का अध्ययन अध्यापन एवं शेधकार्य चल रहा है।

भारत में भोटी की आवश्यकता - उपर्युक्त विवरणों के आधार पर यह कहना गलत नहीं होगा कि **भारतीय संस्कृति के व्यापकता एवं उसकी संरक्षण के लिये अपने ही देश के एक बहुत बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली भाषा भोटी को अपनी देश की भाषा के रूप में संवैधानिक संरक्षण देना आवश्यक है** । इससे सर्वप्रथम अपने देश के बहुत बड़े क्षेत्र में फैले लोगों, जो मैदानी लोगों से शारीरिक संरचना एवं भाषाई सांस्कृतिक दृष्टि से सर्वथा भिन्न हैं, को एक व्यापक सांस्कृतिक सूत्र में बांधने में बहुत सफलता मिलेगी । दूसरा इससे उक्त क्षेत्र के लोगों में इस देश के प्रति सांस्कृतिक एकता के आधार पर आत्मीयभाव उत्पन्न होगा ।

तीसरी बात भोटी भाषा में उपलब्ध सभी विषय भारतीय संस्कृति से उपजे धर्म-दर्शन एवं साहित्य से सम्बद्ध है, इन्हीं **सम्बद्धताओं को एक व्यवहारिक रूप दिया जाये तो उक्त क्षेत्रों के लोगों को इस देश के मुख्य धारा के साथ हमेशा के लिये सांस्कृतिक सूत्र में बांधने का अच्छा मौका मिलेगा और यह सम्बन्ध वास्तविकता पर आधारित होगा** । अन्यथा भाषाई अलगाव के साथ सांस्कृतिक विखराव की रेखा उभरते ही वह बहुत ही गलत दिशा की ओर चली जाती है ।

अपने ही देश के व्यापक क्षेत्र में बोली जाने वाल किसी की सांस्कृतिक

भाषा को अपने देश के संविधान में स्थान देने में किसी को कोई आपत्ति भी नहीं होनी चाहिये । यह तो सर्वविदित है कि किसी भी देश की राष्ट्रीय एकता उस देश की सांस्कृतिक एकता से बनती है । सांस्कृति एकता का तात्पर्य सभी संस्कृतियों को एक संस्कृति में मिलाकर अन्य का नष्ट करना या उनके स्वतंत्र अस्तित्व का नष्ट करना नहीं है, अपितु हर संस्कृति के अस्तित्व को सुरक्षित रखकर उसे ससम्मान अपने साथ रहने का अवसर प्रदान करना है ।

हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा, दिल्ली

भोटी भाषा को संविधान के आठवें परिच्छेद में सम्मिलित करने के सन्दर्भ में :-

1. भोटी लिपि का संक्षिप्त इतिहास

भोटी भाषा एवं साहित्य के इतिहास का श्रीगणेश सातवीं शताब्दी से होता है, जबकि सम्राट स्रोंडचन गम्पो भोट देश पर शासन कर रहे थे इससे पूर्व भोट देश की अपनी कोई लिपि नहीं थी । राजा को बौद्ध/हिमालय वासियों के धर्म, संस्कृति प्रचार प्रसार एवं साधना तथा राजकाज चलाने में लिपि के अभाव में कठिनाई का अनुभव हुआ, अतः उन्होंने भोट देश से थोनमी साम्भोटा और अन्य विद्यार्थियों को विद्या अध्ययन करने भारतवर्ष भेजा । दूर्गम पहाड़ी मार्गों को पार करते वे तत्कालीन प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र नालन्दा महाविहार पहुँचे । वहाँ उन्होंने पण्डित देव विद्या सिंह तथा ब्राह्मण लिपिकार से संस्कृत वाङमय, बौद्ध दर्शन एवं साहित्य का अध्ययन किया ।

2. भोट भाषा का मूल स्रोत

भोटी लिपि का मूल स्रोत अर्थात जननी संस्कृत भाषा है । थोनमी सम्भोटा ने देव नागरी लिपि के आधार पर भोटी लिपि का आविष्कार किया । स्वर और व्यंजनों में आवश्यकता के अनुरूप वृद्धि और ह्रास कर के भोटी में

चार स्वर और तीस व्यंजन निर्धारित किये गये । 20वीं शताब्दी के महान विद्वान गेदुन छोसफेल के मतानुसार गुप्त कालीन खरोष्ठी लिपि के आधार पर थोनमी सम्भोटा ने भोटी लिपि का निर्माण किया था ।

3. भोटी भाषा में भारतीयता

कुछ भी हो देवनागरी लिपि या गुप्त कालीन खरोष्ठी दोनों लिपियों का मूल स्रोत भारत ही है । तत्कालीन भारतीय पण्डित देव विद्या सिंह तथा अन्य लिपिकार गुरुजनों के कृपा से शिष्य थोनमी सम्भोट ने भोटी लिपि का निर्माण किया । तत्पश्चात उन्होंने पाणिणी के संस्कृति व्याकरण को आधार मान कर भोट व्याकरण की रचना की, जिस में आठ प्रकरण थे, कालान्तर में इसी व्याकरण के आधार पर भारतीय धर्म, दर्शन एवं साहित्यिक वाङ्मय के अनगिनत बहुमूल्य ग्रन्थों का अनुवाद एवं नई रचनायें प्रारम्भ हुई ।

4. भोटी भाषा - भोट भाषा

क्रमशः इस भाषा का जिन जिन क्षेत्रों एवं प्रदेशों में प्रचार प्रसार हुआ, वहाँ पर इस भाषा ने लोगो में भारतीयता का भी प्रचार किया । इस भाषा को बोलने वाले समस्त क्षेत्रों में इसे "बोद विग" लिखते और पढ़ते हैं, इस में कोई मतभेद नहीं है । जैसे गंगा का मूल उद्भव स्रोत गंगोत्री हिमालय है, जहाँ से निकल कर वह मैदानी क्षेत्रों में ज्यों-ज्यों फैलती जाती है, ठीक उसी प्रकार मूल संस्कृत भाषा को लद्दाख में बौधी, सिक्किम में भोटी, हिमाचल प्रदेश, उतरकाशी तथा अरूणाचल प्रदेश में भी भोटी कहा जाता है । जबकी तिब्बत एक स्वतंत्र देश था, इस कारण वहाँ पर इसे तिब्बती भाषा कहा जाता है । स्थान एवं देश आदि के दृष्टिकोण से भाषा के नामकरण में जो थोड़ा अन्तर प्रान्तीयता के कारण है भी, वह मूलतः नहीं है । मूल रूप में भोटी भाषा की लिपि, व्याकरण आदि भारतीय भाषा पर आधारित है और भारत की प्रादेशिक भाषाओं में से वह एक है । भाषा के इन्हीं मूल कारणों के आधार पर सीमान्तवासी देशभक्ति, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र निष्ठा एवं भारतीयता की भावनाओं से ओत प्रोत है । इस भाषा में यहाँ की सम्पन्न संस्कृति निहित है । भोटी भाषा

इन क्षेत्रों की जनजातियों का न केवल साहित्यिक भाषा है, अपितु मातृभाषा भी है । जिसकी जननी देववाणी संस्कृत भाषा है ।

क. भोटी भाषा की वर्तमान स्थिति

राज्यों सरकारो की सुचि जिन्होने "भोटी भाषा" को मान्यता प्रदान की :-

1. अरूणाचल प्रदेश सरकार
2. सिक्कीम सरकार
3. पश्चिम बंगाल सरकार
4. हिमाचल सरकार द्वारा विशेष सम्मान (सुविधा) प्रदान किया गया ।
5. जम्मू - कश्मीर सरकार

ख. भोटी भाषा के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्थाः-

भोटी भाषा का विभाग

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
विश्व भारती शान्ति-निकेतन विश्वविद्यालय, कलकत्ता
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
पंजाबी विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
मगध विश्वविद्यालय, बौद्ध गया
कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता
केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह-लद्दाख
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ
बौद्ध दर्शन महाविद्यालय, लेह-लद्दाख
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सिक्किम माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, सिक्किम
जम्मू कश्मीर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, जम्मू कश्मीर

लद्दाख से लेकर अरूणाचल तक के सिमावर्ती क्षेत्र के अधिकतर सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों में भोटी भाषा के अध्ययन की शिक्षा प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक निःशुल्क दी जाती है । विशेषकर सात सौ मठों में भोटी भाषा की पुस्तकालय एवं अध्ययन परमपरागत ढंग से चलाया जा रहा है ।

ग. भोटी भाषा में समाचार

आकाशवाणी लेह (जम्मु - कश्मीर)
आकाशवाणी शिमला (हिमाचल प्रदेश)
आकाशवाणी गंगटोक (सिक्किम)
आकाशवाणी खरशंग (दार्जलिंग)
आकाशवाणी तवांग (अरूणाचल प्रदेश)
आकाशवाणी दिल्ली

घ. भोटी भाषा में प्रिंटिंग प्रेस

रत्न प्रिंटिंग प्रेस
शिवम प्रिंटिंग प्रेस
भोजपुरी प्रिंटिंग प्रेस
लिजेंट प्रिंटिंग प्रेस
सिक्किम सरकारी प्रिंटिंग प्रेस
जयेद प्रिंटिंग प्रेस
सतनाम प्रिंटिंग प्रेस वाराणसी ।
माइक्रो मिंट इण्डिया (प्रा० लिमिटेड देहरादून

भोटी भाषा में कम्प्युटर तथा टाईप राईटर एवं हस्तनिर्मित ब्लॉक के परंपरागत ढंग से छपाई की भी व्यवस्था उपलब्ध है ।

ड. पुस्तकालय

जायसवाल पुस्तकालय, पटना
केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह
केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ

सरस्वती पुस्तकालय, दिल्ली

सम्पूर्णनन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

नामग्याल इंस्टीट्यूट, गंगतोक

शांति निकेतन विश्वविद्यालय, कलकत्ता

सम्पूर्ण बौद्ध वाहुल हिमालय क्षेत्र में प्रत्येक बौद्ध मठ व मंदिर का अपना पुस्तकालय स्थापित है जिनमें न्यूनतम 300 से लेकर 500 तक पोथी पुस्तकें होती हैं ।

व. समाचार पत्र एवं पत्रिका

लद्दाख मेलौंग	लद्दाख
तेन-डेल-सर-ज्युर	लद्दाख
रिग-पे-दुत-ची	लद्दाख
पर-ग्यास-गोड-फुले	लद्दाख
जा-मा-ता	सिक्किम
कुन-साल	सिक्किम
डेंजोंग जामाता	सिक्किम
हिमालय डायंग	दिल्ली

छ. भोटी भाषा को मातृभाषा के रूप में बोलने वालों की संख्या एवं इलाकें :-

	राज्य	इलाका	जनसंख्या
1.	अरूणाचल प्रदेश	तावांग, वेसकेमांग, अप्पर सियांग, अप्पर सवबरसरी, पुर्वो सियांग	3,15,000
2.	सिक्किम	संपूर्ण क्षेत्र	3,25,000
3.	मेघालय	सिलांग, आसपांस	15,000

4.	पंश्चिम बंगाल	कालिम्पोंग, दार्जीलिंग, कॉसियांग एवं सालूगारा, नयु जलपाईगुडी	3,15,000
5.	उत्तरांचल	कुमाउ, पिथौरागढ़, उत्तर काशी	55,000
5.	हिमाचल प्रदेश	लाहौल, स्पिति, किन्नौर, चम्बा, पांगी, कुल्लु, मनाली	3,10,000
6.	जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख	चागंथांग, नूबरा, शम, जुगं, कारगिल, जान्संकर और पलद्दर	3,15,000
		कुल जनसंख्या	**16,80,000**

ज. प्रकाशन कार्य

भोटी भाषा में प्रकाशित ग्रंथों को हम दो भागों में बांट सकते हैं । प्रथम हस्तलिखित प्राचीन शास्त्र एवं दूसरा आधुनिक युग में प्रकाशित कार्य, जिस में विचार गोष्टी, कवि सम्मेलन, अनुवाद कार्य, समाचार पत्र, पत्रिका तथा विभिन्न साहित्यिक वांङमय के विषयों पर विश्वविद्यालीय स्तर के ग्रंथ प्रकाशित होते हैं, तथा देश विदेश में इन ग्रंथों का प्रचुर मात्रा में क्रय-विक्रय होता है।

झ. भोटी भाषा के वाङमय के विकास में भारतीय विद्वानों का योगदान

हिमालय के सीमांत प्रदेशीय क्षेत्रों में भारतीय बौद्ध धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, तर्कशास्त्र, इतिहास, आयुर्वेद, ज्योतिष विज्ञान, व्याकरण, नाटय शास्त्र, काव्य शास्त्र आदि को सातवीं शताब्दी से अब तक भोटी भाषा ने अपने मूल रूप में सुरक्षित रखा है । इस भाषा के विकास में आचार्य गुरु पदमा सम्भव, आचार्य शान्तरक्षित, आचार्य कमलशील, आचार्य दीपंकरश्री ज्ञान एवं रत्न भद्र आदि अननिनत विद्वानों का सहयोग रहा है । 8वीं शताब्दी में आचार्य

शान्तरक्षित ने त्रिपिटक विशेषकर विनय पिटक और अभिसमयालंकार का गहन अध्ययन कर के विद्वत्ता प्राप्त की और उन्होंने ही योगाचार माध्यमिक दर्शन की स्थापना की। आचार्य कमलशील ने अपने ज्ञान और विद्वत्ता के बल पर चीनी दार्शनिक हशांक को पराजित करके धार्मिक विसंगतियों का निराकरण कर बुद्ध शासन की स्थापना की ।

लोचावा रिन्छेन जांगपो (रतनभद्र) द्वारा संस्कृत से भोटी भाषा में अनुवादित बौद्ध ग्रंथों की संख्या ही 150 से अधिक है ।

भोटी भाषा से प्रमाणिक खगोल विद्या (लोथो) जन्त्री का विकास किन्नौर (हि० प्र०) के विद्वान खुनु लामा देवा राम व सनम ढुवग्ये ने किया था । जो कि आज तक सम्पूर्ण पश्चिमोत्तर हिमालयी क्षेत्रों में प्रचलित है ।

दशवीं शताब्दी के प्रारंभ में ल्ह-लामा-ईशो-ओद ने बौद्ध धर्म, दर्शन एवं साहित्य के पुनरूद्धार हेतु रत्न भद्र आदि 21 बालकों को विद्या अध्ययन करने कश्मीर भेजा । दुर्भाग्यवश उस काल में विनय के अनुयायी और तन्त्र अनुयायियों में आपसी मतभेद ने उग्र रूप धारण कर लिया था । इस प्रकार के संकट से उबारने के लिए आचार्य दीपंकर श्री ज्ञान जैसे महान विद्वानों की आवश्यकता हुई । इस कार्य के लिए ग्या-चोन-सिंह-गे के साथ सोना आदि बहुमूल्य उपहार के साथ निमंत्रण पत्र भेजा, परंतु वे सफल नहीं हुए । इस बीच अधिक सोना एकत्रित करने हेतु भ्रमण करते करते ल्ह-लामा-ईशो-ओद को गढवाल (गरलोक) राजा ने सीमा के उल्लंघन का आरोप लगाकर उन्हें बंदी बना कर जेल में बंद करवा दिया, बाद में उन्होंने धर्माथ जेल में ही जीवन त्याग दिया।

तत्पश्चात उनके पोता ल्ह-लामा-जंग-दुप-ओद ने इस महान कार्य को आगे बढ़ाया और अधिक सोना उपहार स्वरूप भिजवा कर नक-छो-लो-च छुलठिम ग्यालवो को विक्रमशिला विश्वविद्यालय भेजा, जहाँ पर ग्या-चोन-सिंगे अध्ध्यन रत थे । इन दोनों ने मिल कर बड़ी सावधानी के साथ आचार्य दीपंकर श्री ज्ञान जी को ल्ह-लामा-ईशो-ओद की बलिदान कथा एवं भोट देश में तथागत बुद्ध शासन की दयनीय परिस्थितियों से अतिशा जी को अवगत कराया

। दूसरी ओर उस समय विक्रमशिला विश्वविद्यालय में अतिशा जी को बौद्ध ध र्म दर्शन एवं तन्त्रादि शास्त्रों का एकमात्र प्रमाणित विद्वान मानते थे ।

भारतवर्ष जो भोट वाङमय की मातृभूमि रही है, उस भूमि पर बुद्ध शासन के दायित्व व संरक्षण के गुरुत्व कार्य का भार स्वयं अतिशा जी पर निर्भर था । इस लिए तत्कालीन विक्रमशिला के महास्थावीर रत्नाकर ने अतिशा को भोट देश ले जाने की अनुमति देने में असमर्थता व्यक्त की । पुनः आग्रह करने पर उन्हें केवल तीन वर्ष तक भोट देश में रहने की अनुमति दी गई ।

त्र. साहित्यिक सम्पन्नता

भोटी भाषा में धर्म, दर्शन एवं साहित्य का भण्डार निहित है । इस भाषा में सभी विषयों जैसे :- दर्शन, साहित्य, विज्ञान, कला, ज्योतिष, नाटय शास्त्र, आयुर्वेद, काव्य, व्याकरण, आदि पर लगभग 33 से 40 हजार तक के ग्रंथ उपलब्ध हैं । इस भाषा में उपलब्ध मूल संस्कृत भाषा से अनुदित शास्त्र के क-ग्यूर एवं तान-ग्यूर के मूल शास्त्रों के 4502 संस्कृत ग्रंथ लुप्त हैं, परंतु भोट भाषा में अब भी यह सुरक्षित है । यह भाषा सम्पन्न एवं समृद्ध है । बौद्ध साहित्य के अतिरिक्त भारतीय षड दर्शन, मेघ दूत, कुमार सम्भव, कुरान शरीफ, बाईबल आदि ग्रंथों का अनुवाद भी भोटी भाषा में उपलब्ध है ।

त. राष्ट्र निर्माण में योगदान

राष्ट्र निर्माण की दृष्टि से अन्य भारतीय प्रान्तीय भाषाओं से भोटी भाषा का योगदान कम नहीं है । जैसे धर्म, दर्शन, चिकित्सा शास्त्र, साहित्यिक भाषा व सांस्कृतिक दृष्टि से इस भाषा का राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है । इस भाषा की शास्त्रीय प्रमाणिकता तब सिद्ध होता है, जब शास्त्रों का मूलनाम भारतीय भाषा में लिखा हो । राजवंशों के शासन काल में इस भाषा के माध्यम से प्रशासनिक राजकाज पत्राचार आदि कार्य सम्पन्न होता था । वर्तमान वैज्ञानिक युग में भोटी भाषा और इससे जुड़ी संस्कृति और सभ्यता को अप्रत्यक्ष रूप से क्षति पहुंची है । लोगों की दृष्टि रोजगर परख भाषा एवं ज्ञान की ओर जाने लगी है ।

फलतः प्राचीन भारतीय विद्याओं की ओर लोगों में उदासीनता का भाव पैदा होने लगा है, जो अत्यंत कष्ट का विषय है । **यह विचारणीय है कि प्राकृतिक सौन्दर्य से समृद्ध एवं सांस्कृति धरोहर से सम्पन्न सीमान्त प्रदेशीय क्षेत्रों के द्वारा जब से विदेशी पर्यटकों के लिए खोले हैं, तब से लेकर नौ जवानों के मन में भारतीयता की भावना के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव पड़ने की आशंका होने लगी है, इस दृष्टि से भोटी भाषा को संविधान के आठवीं परिच्छेद में शामिल कर के राष्ट्र भाषा हिन्दी की छोटी बहिन के रूप में पुष्पित एवं पल्लवित होने का सुअवसर मिलना आवश्यक है ।**

ऐसा होने पर निश्चित रूप से भोटी भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को सीमांत क्षेत्रों मे बढ़ावा मिल सकेगा । हिमालय क्षेत्र के ये भूभाग पिछड़े क्षेत्र, संवेदशील तथा अनुसूचित जनजातियों व सामरिक महत्व का क्षेत्र है । यहाँ की सम्पन्न एवं समृद्ध संस्कृति के साथ भोटी भाषा का विकास एवं प्रगति होनी चाहिए । इसके लिए आवश्यक है कि इस भोटी भाषा को भारतीय संविधान के आठवीं परिच्छेद में शामिल कर के सीमान्तवासियों की भावनाओं का सम्मान हो। क्योंकि अनेकता में एकता ही भारत की मूल मन्त्र है ।

यह संक्षिप्त विवरण भविष्य में पत्राचार की आशा सहित प्रस्तुत किया जा रहा है।

हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा
दिल्ली

BHOTI LANGUAGE & ITS IMPORTANCE

Language is the medium of instruction in society. It determine the culture of society. There is inter dependent relation between culture and language. In fact culture is the product of agrofacts (products of cultivation), artifacls (products of industry) socio facts (social organisation and mentifacts (language, religion, art and so on). Bhoti is the most important language of central Asian civilization. It is very difficult to present the origin of Bhoti language in development of human civilization. **Many studies proved that the primary form of this language was dialectics of people of entire himalayan region of India. Therefore Bhoti is the mother tongue of Himalayan people as well as source of indian culture.**

According to evidence it was written in different script of Central Asia in ancient period. But today there is not any literature available in these scripts. Time and again an independent script has developed in late 7th B.C. in the form of Brahmi script. Some historian argued that it was made of refined script of Gupta period. Ancient literature in this language was in oral form. It developed as independent script in 7th B.C., Since then the literatures were written in this language are in larger number. Later on the basis of Panini's Grammer, the grammer of Bhoti language came out.

It is general theory that language developed from dialectics. Dialectics develope in the particular Geographical boundaries as a result of behaviour and Sanskar of the local people. The earliest form of Bhoti language was the dialectics of great land of central Asia. There is no need to give historical details about the races who live in Central Asia. But there expansions seems from China to Northern Himalayan India. The refine form of the dialectics of these people are called Bhoti language.

Bhoti language denotes the language of Bhoti lineage. Due to language of Bhoti races its call Bhoti language. There are many legenderies about Bhoti races. There is a famous legends that people of Bhoti has a relation with the Rajput Lineage of Dwapar era. After the defeat of Kaurvas in Mahabharat, many Rajput took shelter with family in Himalaya. Bhoti linegae has developed by them only. Due to this, some argue that Bhoti language is the member of the family of Aryan language. Another important legend is that Pandwas stayed at origin of the river Vyas - called 'Manu-Alay' - modern name Manali during their forest life(Vanvas). **Bhimsen** got an opportunity to get interact with the **Queen Hidimba.** Their interactions gave a birth of two child named elder one was Kullu and younger one was 'Bhot'. Bhim killed demon king who was brother of **Hidimba** and appointed his son the king of Kullu. Since them, the kingdom is known by the name of **Kullu** and he send his younger son '**Bhot**' to Devalok which supppose to" situated after Rothang Valley. Bhot has established his kingdom in Devlok which later became 'Bhot' Country. The Race of Bhot developed with the expansion of Bhot Kingdom. The language of these people called Bhoti language. It is very difficult to rely on these legendries but it is also the fact that the Bhoti language denotes the dialectics of entire Himalayan People.

AREA OF BHOT : It is the language of masses and local people of Himalaya. It is also link language of the people who live under the boundary of Himalaya. It has been used in classical form for speaking and writing in Bhutan, Nepal, Mangolia, Tibet and entire Central Asia. After Ninteteenth century (19thC) large number of research and studies has been conducted by different universities of Asia, Europe, America on Bhoti language and its classical literature which were related to this. With the main language of Central Asia, Bhoti is link and cultural language of Zanskar, Ladakh, Spiti, Kinnaur, Uttar Kashi, Sikkim, Kalimpong, Darjeeling, Arunachal and the entire Himalayan range of ndia. It determines the way of life of Himalayan people.

All important religious text of these areas are in Bhoti.

BHOTI LITERATURE :

The value and development of any language has been judged through available literature on the concerned language. The classical literature in Bhoti language is not only available in the **'Bhot'** countries but it is also available in different countries from Lichi to America. The availabilities of only translations from sanskrit to Bhoti are more than Ten thousand. In addition, there are large number of literature available which were written independently by Bhot scholar's in Bhoti Language. For example; more than one hundred volume's has been written by scholar Tsogyal Namgyal (Pandit Vijay).

On the theme ' or 'Subject' point of view, there are large number of classical literature available on Poetry, Drama, Grammer, Astrology, Medical Sciences like Ayurveda, Logic, Philosophy, Diplomatic Science, Arts, Religion, Culture etc. The collection of Buddha's preaching called 'Tripitakka' are available in 108 volumes, which is the largest collection of 'Tripitakka' of the world. The Buddhist preaching on Tantra's are also available in more than forty volumes. All these above texts were originally written in Sanskrit which later on translated in Bhoti. At present these texts are not available in its original language. In another word, It may be said that from 7th to 18th century, the composition of texts in this language is more than that of any language. Besides, there were various number of texts which has been composed after 15th century.

IMPORTANCE OF BHOTI LANGUAGE :

In the study tradition of world, the language has important role. Without language, study can not be forwarded. In this context, Bhoti became the instruction of higher learning. In the plain of Indian subcontinent, Sanskrit has got major importance whereas same importance Bhoti got in Hiamalaya and Central Asian region. To express

Indian spiritualism, Sanskrit is necessary. Likewise Bhoti is necessary to express Bodh feeling and Bhots expression. That's why the institutes of higher studies in developed and most developing countries are pursuing the study of Bhoti.

After all, it wouldn't be wrong to say that to preserve Indian Culture, Bhoti language should be provided constitutional safeguard. It will create awareness among peoples about their cultural identity and integrity. It will also help to bring Himalayan people into national mainstream of the country since the subject matter available in this language is primiraly related to Indian Culture and Philosophy. There would not be a problem for anybody to give importance in our constitution to the language spoken in major part of our countries. It is fact that National unity of any country is made by Cultural unity of Nation. Cultural Unity means to give priority to all culture. Cultural unity is necessary for National Unity. Cultural Pluralism is Characteristic of our country.

RECOGNITION OF BHOTI LANGUAGE IN THE EIGHT SCHEDULE IN CONTEXT TO RECOGNISE

1. Brief History of Bhoti Language

The history of Bhoti language and literature began in 7th century during the rule of **Tsongtsen Gampo** on the land of Bhot. There was not any script available before this. Due to absence of script the King face the problem in governing the country. That's why he send some students including **Thonmi Sambhota** to India for education. After crossing mountains their students reached **Nalanda**, the contemporary learning centre. At Nalanda they taught Sanskrit, Buddhist, Philosophy and literature by **Pandit Dev Vidya Singh** and other Brahmin writer.

2. Origin of Bhoti Language :

Sanskrit is the mother of Bhoti Thonmi Sambhota has coined the script of 'Bhoti' on the basis of Devnagri script. According to need, making modification in vowels and consonents they identified four vowels and thirty consonents.

3. Indianess inthe Bhoti Language :

After all India is the originating place of both the script **Devnagari and Khrosti** of **Gupta** period. With the help of contemporary scholar particularly **Pandit Dev Vidya Singh** and others, **Shree Thonmi Sambhota** has coined Bhoti Script. Then he composed Bhot Grammer on the basis of Sanskrit Grammer. Later on many book on Indian religions and Philosophy has been composed and translated.

4. Bhoti language - Bhot Language:

With the expansion of this language in different region and state Indian culture has also developed in same region simultaneously. There is no doubt that the people of entire Himalayan region where it use in writing and speaking called 'Bodhi' in Laddakh and Bhoti in Sikkim, Darjeeling, Kalingpong, Himachal Pradesh and Arunachal Pradesh which as known as **'Bod Vig'.** When **Tibet** was independent country. and so far as concern the Lingua Franca of this locality language is called **Tibeti** in Tibet. There is some difference according to region to in pronounciation not in its original from. i.e. script.

In original form the script and Grammer are based on Indian Language. It is one of the regional language of India. Due to this reason the people of borders are patriotic. This language is culturally rich. It is a mothertongue of Bhot Tribe, Sanskrit is the language of god is the mother of Bhoti.

A. Present status of Bhoti :

List of States Govt. who recognised "Bhoti Language"

i) Arunachal Pradesh Government

ii) Sikkim Government

iii) West Bengal Government

iv) Special status by Himachal Govt.

v) Jammu & Kashmir Government

B. Study Centre of Bhoti Language :

Department of Bhoti

(a) Himachal Pradesh University , Shimla

(b) Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi

(c) Viswa Bharti Shanti Niketan University, Calcutta

(d) Delhi University, Delhi

(e) Punjab University, Chandigarh

(f) Punjabi University, Chandigarh

(g) Gorakhpur University, Gorakhpur

(h) Magadh University, Bodhgaya

(i) Calcutta University, Calcutta

(j) Central Institute of Boddhist Studies, Leh-Laddakh

(k) Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath

(l) Buddhist Philosophical College,

(m) Central Seeondary School examination board, Delhi

(n) Sikkim Secondary School examination board, Sikkim

(o) J & K Seconary School examination board, J & K

C. News in Bhoti Language

(a) All India Radio Leh

(b) All India Radio Shimla

(c) All India Radio Sikkim

(d) All India Radio Khasng

(e) All India Radio Tawang (Arunachal Pradesh)

(f) All India Radio Delhi

(g) All India Radio Gangtok

D. Printing Press is Bhoti Language

(a) Ratna Printing Press

(b) Shivam Printing Press

(c) Bhojpuri Printing Press

(d) Lizent Printing Press

(e) Sikkim Governmental Printing Press

(f) Jayed Printing Press

(g) Zunkhul Parkhang Printing Press

(h) Satnam Printing Press Varanasi

(i) Micro Mint India (P) Ltd., Dehradun

(j) Type writer & Computer is also available in Bhoti as well as manual hand making block printing system.

E. Library

Jayaswal Library, Patna
Central Institute of Buddhist Studies, Leh
Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath
Saraswati Library, Delhi
Sampurnanad Sanskrit University, Varanasi
Kashi Hindu University, Varanasi
Namgyal Institute, Gangtok, Sikkim
Shanti Niketan University, Calcutta

F. News Paper & Magzines

Ladakh Melang	Leh
Ten - Del - Sar - Jyur	Leh
Rig - Po - Dut - Che	Leh
Par - Gyas - God - Phule	Leh
Sikkim Chamata	Sikkim
Kun - Sal	Sikkim
Denzong Zamata	Sikkim
Himalaya Dayang	Delhi
Himalaya Voice	Delhi

G. In the border region i.e. from Laddakh to Arunachal Pradesh, mostly government and nongovernment school will provide to extend the prudence of **Bhoti Bhasha (Language).**

Specialy in this context nearly in seven hundred monastries, the Bhoti language study course will carry in a traditional way.

H. Population of Bhoti speaking as Mother tongue and its region

	State	Region	Nos. of Population
1.	Arunachal Pradesh	Tawang, West Kameng, Upper Siyang Upper Sabbarsari, East Siyang	3,15,000
2.	Sikkim	All region	3,25,000
3.	Meghalaya	Shillong Adjoining Area	15,000

4.	West Bengal	Darjeeling, Kalimpong, and Salugara, Jalpaiguri	3,15,000
5.	Uttaranchal	Kumanun, Pithoragarh, Uttar Kashi, Nainital	55,000
6.	Himachal Pradesh	Lahaul, Spiti, Kinnaur, Chamba, Pangi, Kullu, Manali and its nearest area	3,10,000
7.	Jammu & Kashmir	Changthang, Nubra, Sham, Jung, Kargil, and Laddakh, Zanskar and Paddar	3,15,000
	Total Nos. of Population		**16,80,000**

I. Publications

We can divide the published books in Bhoti language into two parts. First handwritten ancient literature and second modern publication including report of seminar, kavi gosthi, translation, newspaper, magazine and book published of universities standard in different from of literature. There is big market of its publications at National and International level.

J. Contibution of Indian Scholars is the development of Bhoti Language

The Indian Buddhist philosophy, logic, history, astrology, ayurveda, grammer, drama, poetry etc. of Himalaya region is still preserved in Bhoti language since 7th century. There are great contribution of **Acharya Guru Padma Sambhav, Acharya Shanta Rakshit, Acharya Kamal Sheel, Acharya Dipankar Shree, Ratna Bhadra** and others in the development of this language :- Acharya

Dipankar Atisha has full filled his responsibilities of teaching and prserving Bhoti language in contemporary Buddhist rule in India. Which was the motherland of Bhagyet mangmay. That's why the contemporary Mahasthavi of Vikramsila śh Ratnakar refused to give permission. After lots of request he allowed to stay Bhot country only for three years. After studied Tripitak specially Vinay Pitak and Abhisamayalaṇkar Shree Acharya Santa Rakshita became the scholar and eastablished Madhyamik Philosophy. Acharya Kamalsheel defeated chinese philosopher Hashank and eastablished Buddhist kingdom on the basis of his wisdom & knowledge.

In the beginning of tenth century Lah-Lama Yeshe od has send 21 students including Ratna Bhadra to Kashmir for study Buddhism, philosophy & literature. Unfortunately there was tussle between the followers of Vinay and Tantra due to some differences in opinion. To come out from such problems the need of Acharya Dipankar felt. In the meantime Lah-Lama Yeshe od was arrested by Garhwal king when he was moving for collecting were gold. Later he died in Zail. After that his grandson Lah-Lama- Zang - Chhup - od has extend this great work and send Nak - Tsho - Lo - Tsawa Tsultrin Gyatsho to Vikramsil for study where Gya - Chon Single was already involved in study. Both the person together meet Acharya Dipankar Atisha and carefully told the sacrifice story of Lha- Lama - Yeshe - Od and misearable condition of Buddhist rule in Bhot country.

Lotsawa Rinchen Zangpo (Ratna Bhadra) translations from Sanskrit to Buddhist more than thousand text are available.

According to Bhoti language it is proved that the Astronomy (Lotho) Jantri was developed by **Negi Lama Rinpoche, Devaram, Sonam Dukgye.** This the Lotho which is now a days is famous in the world and as well as in Himalayan region to.

K. Prosperity in Literature

There are 35 to 40 thousand material available in Bhoti regarding religion, Philosophy, art, science, astrology, Ayurveda, Grammer etc. The most important text kagyur & Tangyur are available is Bhot only although originally it was translated from Sanskrit. There were 4502 original texts is Sanskrit which is not available now. Thus the Bhoti is very rich language. Besides Buddhist literature, the translation of khad philosophy, Meghdoot, Kumar Sambhav, Kuran Sharif, Bible etc. is also available in Bhoti language.

L. Contribution in Nation Building

The role of Bhoti language in nation building is not less than of any other language. In the point of Medical Science, Philosophy, Religion it has great role in Nation building. Its classical validity prove when the original name of text has written in Indian language. During the rule of kingdom administrative and other work was done by this language only. The Bhoti culture and language get effected in Modern Scientific era now people became more prone to employment related language and knowledge. It is very painful that people became disenchanted towards traditional Indian knowledge. The young mind become more prone to western culture when tourist stanted comming to border area which is full of natural beauty. That's why it is necessary to include Bhoti language in 8th schedule of constitution. National unity will get strength in boarder region by inclusion of Bhoti language in 8the schedule of constitution. The entire Himalaya is the back area of schedule caste, with great strategic sensitivity. So, to develop this region, it is necessary to develop Bhoti language. For the respect f the feeling of the Himalayan people it is necessary to include Bhoti language in 8the schedule of constitution because unity in diversity is the main feature of India.

We are presenting this brief note with the hope of some meaningful comment and correspondence in future.

President,
Himalayan Buddhist Cultural Association

ཨཱ་ལི། = स्वरवर्ण

ཨི་ ཨུ་ ཨེ་ ཨོ།

इ उ ए ओ

གསལ་བྱེད་སུམ་ཅུ་ནི།

तीस व्यंजन

ཀ་ ཁ་ ག་ ང་། ཅ་ ཆ་ ཇ་ ཉ། ཏ་ ཐ་ ད་ ན།

क ख ग ङ। च छ ज ञ। त थ द न।

པ་ ཕ་ བ་ མ། ཙ་ ཚ་ ཛ་ ཝ། ཞ་ ཟ་ འ་ ཡ།

प फ ब म। च़ छ़ ज़ व। ज(श़) ज़ ह(ऽ) य।

ར་ ལ་ ཤ་ ས། ཧ་ ཨ།

ऱ ल श स। ह अ।

རངརེ་སྐད་ཀྱི་ཡི་གེ་མཛད་པ་པོ་ཐུ་མི་སམ་བྷོ་ཊ།

भोटी भाषा के निर्माता आचार्य थोनमी समभोटा

Founder of Bhoti Language Acharya Thonmi Sambhota

ཛོ་ཁི་སྐད་ཡིག་ནི་ཧི་མ་ལ་ཡའི་ཚོས་སྲིད་ཀྱི་རྩ་བ་ཡིན།

སྐད་ཡིག་ནི་ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱི་རྩ་བ་ཡིན་ཞིང་། ཚོས་དང་སྲིད། རང་དང་གཞན། ཀྱི་དང་སྔེ་ར། ཚོ་འདི་དང་ཕྱི་མ་སོགས་བདེ་བ་དང་སྐྱིད་པའི་འབྱུང་ཁུངས་ཅི་འདོད་འགྲུབ་པའི་ནོར་བུ་དགོས་འདོད་དཔུང་འཇོམས་ལྷ་བུ་ཡིན།

དེ་ལྟར་ཡང་རྒྱལ་ཁབ་ཡུལ་ལྗོངས་གང་འདྲ་ཞིག་ཡིན་རུང་། ཕོག་མར་རང་རང་གི་མཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་སྐད་ཡིག་ལ་སྦྱངས་པ་དྲུས། དེ་ནས་རྒྱལ་ཁབ་དང་། འཛམ་གླིང་སྤྱི་ལ་ཁྱབ་པའི་སྐད་ཡིག་ལ་སོགས་པ་སྦྱངས་པ་མཛད་ན། ཀྱི་ཚོགས་ནང་མཐོང་ཆེ་ཞིང་གཟི་བརྗིད་ཤིན་ཏུ་ཆེ།

དེསན་རང་རེ་མོན་ནས་ལ་དྭགས་བར་ཧི་མ་ལ་ཡའི་ལྗོངས་སུ། ཕོག་མར་འགྲོ་བ་མི་ཆགས་ལ་ནས་བྱུང་དང་བའི་སྐད་ནི། ང་དང་ཧོད་ཞེས་པའི་སྐད་དང་། ཡི་གེ་འབྲི་ཤོ་ལ་བྱུང་བ་ནས་བྱུང་དེ་དང་བའི་ཡི་གེ་ནི། ཀཁག་ང་ཞེས་པའི་ཛོ་ཁི་སྐད་ཡིག་རྣམས་འཛམ་གླིང་ནང་ཡོངས་སུ་གྲགས་ཤིང་། རང་རེ་ཧི་མ་ལ་ཡ་པ་རྣམས་ཀྱི་སྐད་ཡིག་དོ་མ་དང་། རྩ་བའི་སྐད་ཡིག་ཡིན།

ཛོ་ཁི་ཤ་དེ་རི་ནང་རྒྱལ་བའི་བཀའ་འགྱུར་དང་། དེའི་

དགོངས་འགྲེལ་བསྟན་འགྱུར། བཅུ་ཕྲག་རིག་པའི་གནས་ལ་སོགས་པ་ས་སྟེང་ན། ཕྱི་ནང་གི་རིག་གནས་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད་པ་ཚང་ཞིང་སྒྱུ་ག་པོ་དང་། ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་སྐད་ཡིག་ཡིན་པ་མཁས་པའི་ཁྲོད་ན་གྲགས་ཆེ། དེ་སྔར་ན་རང་རེའི་ཧི་མ་ལ་ཡའི་ལྗོངས་སུ། བདེ་སྐྱིད་ཀྱི་རྩ་བའི་ཆོས་དང་རིག་གཞུང་ལ་རག་ལས། ཆོས་དང་རིག་གཞུང་ཡར་རྒྱས་ཀྱི་རྩ་བའི་སྐད་ཡིག་ལ་རག་ལས། སྐད་ཡིག་ཡར་རྒྱས་ཀྱི་རྩ་བའི་ཀན་གཞོན་ཚང་མས། སོ་སོའི་ཡུལ་དང་། ནང་དུ་གསུང་གླེང་བཀའ་མོལ་སྤྲུག་ལས་གང་ཡོད། རྒྱུན་དུ་སྐད་ཡིག་འདི་སྤྱོད་ནས་མཛད་རྒྱུ་དང་། ན་གཞོན་རྣམས་ལ་སློབ་གྲྭའི་ནང་སྐད་ཡིག་འདི་སྤྱོད་འཛིན་གྲྭ་བཅུ་པ་བར་དུ་སློབ་སྦྱོང་བྱེད་ཐུབ་པ་ཞིག་བྱ་རྒྱུ་ཤིན་ཏུ་གལ་ཆེ།

དེའི་ཆེད་དུ་ཚང་མ་གཅིག་སྒྲིལ་མཛད་དེ་རང་རེའི་གཅེས་པའི་རྒྱལ་ཁབ་རྒྱ་གར་དབུས་གཞུང་ནས་སྐད་ཡིག་འདི་ངོས་ལེན་མཛད་རྒྱུའི་གཞུང་གི་རྩ་ཁྲིམས་ཨང་བརྒྱད་པའི་ནང་འཁོད་ཐུབ་པ་ཞིག་ངེས་པར་མཛད་དགོས།

དེའི་ཕྱིར་ཉེ་མ་མི་གྲོགས་དང་། ཆར་བ་ཀྱུ་གྲོང་ཞེས་པའི་དཔེ་བཞིན་ཕན་ཚུན་རོགས་རམ་དང་། རང་དོན་རང་གཅེས་སུ་དགོངས་ཏེ། ཡུལ་ལུང་སོ་སོའི་མི་མང་ནས་སྐད་ཡིག་འདི་རྩ་ཆེན་པོ་ཡིན་པ་མཁྱེན་པར་མཛད་དེ། རྒྱལ་ཁབ་དབུས་གཞུང་དང་། འབྲེལ་ཡོད

མངའ་སྡེ་གཞུང་བཅས་ལ། རྒྱལ་ཁབ་ཞི་བདེ་དང་རིག་གཞུང་སྲུང་སྐྱོབ་དང་ཡར་རྒྱས་ཀྱི་ཆེད་དུ། བྷོ་ཊི་སྐད་ཡིག་འདི་ཡང་སྐད་ཡིག་གྱི་མཚུངས་བཞིན་ངོས་ལེན་མཛད་ནས་རྩ་ཁྲིམས་ཨང་བརྒྱད་པའི་ནང་འཁོད་... དགོས་ཞེས་ཕྱོགས་ཀྱི་ལས་དོན་འགྲུབ་པ་ཞིག་ངེས་པར་མཛད་དགོས་ཞུ་རྒྱུ་དང་། ལས་དོན་འདི་ལེགས་འགྲུབ་ཡོང་ཐབས་སུ། བཀའ་སློབ་དང་གང་ཅིའི་མཐུན་འགྱུར་རོགས་རམ་གནང་མཁན་རྣམས་ལ་སྙིང་ནས་དཀའ་བསྡུ་དང་། བཀྲ་ཤིས་བདེ་ལེགས་ཞུ།།

སྐད་ཡིག་འདི་ལ་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་འགའ་ཞིག་ཡོད་པ་ནི། མོན་ཡིག ལྷོ་ཡིག འབྲས་ལྗོངས། ལེབ་ཙ། འབོ་ཏི་ཡ། ཁུ་ནུ། སྤྱི་ཏི། གར་ཞ། ལ་དྭགས། བལ་ཏི། ཟངས་དཀར། བོད་ཡིག ཅེས་པ་ནི། ཐོག་མར་ཡུལ་ལུང་དེ་དང་དེ་དག་ཏུ་དར་ཁྱབ་ཆེ་བས། ཡུལ་སོ་སོའི་མིང་སྦྱར་ནས་སྐད་ཡིག་ལ་བཏགས་པ་ཡིན་ལ།

བྷོ་ཊ་ཡིག་གམ་བྷོ་ཊི་ཞེས་པ་ཡི་གེ་འདི་ཐོག་མར་མཛད་པ་པོའི་མཚན་སྦྱར་ནས་སྐད་ཡིག་ལ་བཏགས་པ་ཡིན་པས། རང་རེ་ཧི་མ་ལ་ཡ་པ་རྣམས་ནས་སྐད་... ཡིག་འདི་ལ་བྷོ་ཊ་ཡིག་གམ། བྷོ་ཊི་ཞེས་པའི་མིང་... འདི་ཐོག་ནས་ངོས་འཛིན་མཛད་ན། འབྲེལ་ཡོད་མངའ་སྡེ་སོ་སོ་དང་། རང་རེ་རྒྱལ་ཁབ་དབུས་གཞུང་ནས་ངོས་འཛིན་མཛད་རྒྱུ་སོགས་ལ་ཤིན་ཏུ་འབྲེལ་ཆེ་ལགས།། ཆོས་འཕེལ་བཟོད་པ

མཆོད་བརྗོད།

मङ्गलाचरण

གཞོན་ནུ་སྐུ་ལུས་འཆང་བ་པོ། ཡེ་ཤེས་སྒྲོན་མེ་རབ་གསལ་བ།

जोनु कु-लुस् छङ वा पो, ये-शेस् डोन् मे रब् सल वा।

सदा कौमार्यरूप धारण करने वाले, ज्ञान दीपक के आलोक से

འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་མུན་སེལ་བ། འཇམ་པའི་དབྱངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།

जिग तेन सुम्-ग्यी मुन सेल वा, जम् पहि यङ ला छग छ़ल लो।

तीनो लोकों के (अज्ञानता रूपी) अन्धकार का निराकरण करने वाले,

मञ्जुघोष को मैं प्रणाम करता हूँ।

ཨོཾ་ཨ་ར་པ་ཙ་ན་དྷཱིཿ

ॐ अ र प च न धीः,

བརྩེ་ལྡན་ཁྱེད་ཀྱི་མཁྱེན་རབ་འོད་ཟེར་གྱིས།

चे दन् खेद् क्यी खेन्-रब् होद-जेर गीस्।

कृपालु! आप के प्रज्ञा-प्रकाश द्वारा

བདག་བློའི་གཏི་མུག་མུན་པ་རབ་བསལ་ནས།

दग्-लोहि ति-मुग् मुन-पा रब-सल नस्।

मेरे बुद्धि के अज्ञान-अन्धकार का निराकरण हो।

བཀའ་དང་བསྟན་བཅོས་གཞུང་ལུགས་རྟོགས་པ་ཡི།

का-दङ तन-चोस् जुङ लुग तोगस् पा यि।

सूत्र एवं शास्त्र नयों का अवबोधक—

བློ་གྲོས་སྤོབས་པའི་སྣང་བ་སྩོལ་དུ་གསོལ། །

लो-डोस् पोबस् पहि नङ वा च़ल दु सोल।

बुद्धि और प्रतिभा का आलोक प्रदान करें।